तालाब की तड़प

जल से निकली मछली की तरह
तड़प रहा है गांव का अकेला तालाब।
रामजी वाली जोहड़ी तो कब का दफन हो गई
खेतों में।
डूबा वाली को नोंच ले गए माफिया।
भट्ठा मालिक ने पेले जोहड़े की चिकनी मिट्टी
से तराश,
सोने की ईंट की तरह बेची एक–एक ईंट।
लाम्बे में पसर गईं झाड़ियां
उधर जाने से भी घबराता है अब दिल
कभी वहीं कटती थी पूरे गांव की दुपहरी
मछली चावल की थाली के साथ।
सरवे में बंधी डोरी और कांटा,
पास रखा टाप,
बस यही ये ही थे हथियार।
अब्बा बताते हैं
एक बार
फड़ फड़ फड़... घूम गया टाप,
पानी में कोहराम।
प्रेत समझ भरी दुपहरी मच गया शोर
चंद मिनटों में सब के सब तालाब से बाहर
अकेले अब्बा!
दांत भींच कर पहला कलमा पढ़
डाल दिया टाप में हाथ–
ला इलाहा इल्लल्लाह...।
गांव भर की नजर अब्बा पर
अब पानी की सतह पर फड़केगा
मछली की तरह तड़पेगा
टूटकर गिर जाएगा हाथ
टाप में...तैरने लगेगा पानी के उपर।
चारों ओर से पुकार
छोड़ दे टाप, बाहर निकल
प्रेत है... प्रेत...
और
अब्बा जंग जीत गए।

बाहर निकले, भुजाओं में थामे
कलमे की बरकत
दस–बारह किलो की मछली!
पीर वाले इस तालाब से तो जुड़ी हैं
मेरी भी कई यादें
वो
जब बैल की पूंछ छूट जाने पर
मुंह से निकलने लगे थे बुलबुले
भैया ने लगा दी थी छलांग
खींच लाए थे पल भर में किनारे।
हमेशा की तरह पड़ी थी डांट
अब्बा की लाल–पीली आंखें–
जोहड़े में मत घुसना आज के बाद
ढोर की पूंछ पकड़कर तो कभी नहीं।
वो
जब शाम के वक्त, बारिश थमने के बाद
ठंडी–ठंडी हवा के झोंके
लहराता हुआ निकला सांपों का जोड़ा
पानी की सतह पर अठखेलियां
लहरों से खेलता रहा देर तक।
कुछ ही देर में
तू चल, मैं चल
तालाब के किनारे जमा आधा गांव।
हैरत से फटी आंखें,
बच्चों का शोर...।
पर,
कैसे बदले दिन,
किसकी लगी नजर।
या,
पड़ गई उपेक्षा भारी
सूख गई तलैया सारी।
आज तालाब रो रहा है
पानी बिन तड़प रहा है।
कोई नहीं सुनता उसकी गुहार
बादलों से भी बेकार गई मनुहार।
मेंढक भी कुछ दिन बाद ही
हो गए गायब अपनी टर्र टर्र का बाजा लेकर।
अकेली पड़ गई झिंगुरों की आवाज

हमेशा किनारे खड़े प्रहरी की तरह
पेड़,
एक–एक कर हो गए शहीद।
पीर पर चढ़ावा चढ़ाने नहीं आतीं
गांव की महिलाएं–बालाएं।
दशहरे के दिन अर्पित होने वाले
उपले पर उगे जौ,
अब सूख जाते हैं मुंडेर पर।
हर दम पानी को घेरे रखने वाली बाह
खड़ी रह गई ठगी सी।
जाने कहां चली गईं
बाह के गहरे–अंधेरे बिलों मे रहने वाली गोएं।
जिनकी आवाज से गूंज उठता था पूरा कब्रिस्तान।
दिखाई नहीं दिया काले सांपों का जोड़ा
सालों से...।
छाती पर पथ रहे हैं उपले
बच्चे खेल रहे हैं क्रिकेट, खो–खो
दिन भर शोर
मदमाते पशुओं का नहीं,
सांपों–गोओं का नहीं,
बस्ता झूंड में छिपाकर खेलने वाले बच्चों का।
अस्तित्व के लिए जूझ रहा तालाब
डर से कांप रहा है
वक्त की चाल भंप रहा है।